HINDI

The Spoken Word

by

WILLIAM MARRION BRANHAM

वह स्त्री इजेबेल

(THAT WOMAN JEZEBEL)

परमेश्वर का कहा हुआ वचन ही मूल बीज है

वह स्त्री इजेबेल

(THAT WOMAN JEZEBEL)

प्रकाशित वाक्य २:२० – ''पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है और मेरे दासो को व्यभिचार करने, और मूरतो के आगे के बलिदान खाने को सिखलाकर भरमाती है।''

अब देखिये कि इस पद के साथ मैं चाहता हूँ कि आप नीचे २३ वें पद तक जायें और उस बड़ी सच्चाई के सबूत को देखे जिस पर मैं आप का ध्यान खींचने का प्रयास हमेशा करता रहा हूँ।' और मैं उसके बच्चों को (मौत से) मार डालूँगा और तब सब कलीसियाऐं जान लेंगी कि हृदय और मन का परखने वाला मैं ही हूँ' (कृपया KJV की अंग्रेजी बाईबिल में देखे जहाँ लिखा है कि ''I will kill her children with death – अनुवादक) मैं अब तक यही कहता चला आ रहा हूँ कि वास्तव में दो प्रकार की कलीसियाऐं कायम रही है, हांलाकि पवित्रात्मा प्रत्येक काल मे दोनों को सम्बोधित करता रहा है मानो कि वे एक हो। यहाँ पर यह बात साफ तौर पर बतायी गई हैं कि बहुत सी 'कलीसियाऐं' है और यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि प्रमाणित तौर पर वे कलीसियाऐं यह नहीं जानती कि एक वही (यीशु मसीह) हृदय व मन का परखने वाला है।

वह उन को यह साबित कर देना चाहता है कि वही एक मात्र हृदय व मन का परखने वाला है। अब वे कौन सी कलीसियाऐं है जो इस सच्चाई को नही जानती? वास्तव में वे सब झूठी दाखलताएं है - झूठी कलीसियाऐं है, 'क्योंकि सच्चे विश्वासी तो निश्चित रूप से जानते है कि न्याय परमेश्वर ही के द्वारा शुरू होता है। न्याय वही करता है। और परमेश्वर से डरने वाले वे विश्वासी स्वयं को वचन से परखते रहते है ताकि उन्हे न्याय में न जाना पड़े।

अब देखिये कि परमेश्वर इन झूठे गिरजो को अपनी कलीसियाऐं क्यों कह रहा है? इस बात की सच्चाई इस तथ्य में है कि वे सभी मसीही कहलाते है मगर वे आत्मा से जन्मे मसीही नही है। वे शरीर के अनुसार मसीही कहलाते है - वे उसका नाम व्यर्थ लेते हैं। मरकुस ७:७ के अनुसार, 'और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओ को धर्मोपदेश करके सिखाते है। 'मगर वास्तव में वे मसीही है और इस के अलावा क्या हो सकते है? एक मुसलमान तो मुसलमान ही कहा जायेगा क्योंकि मुस्लिम उस का धर्म है चाहे वह कैसा भी जीवन जीये, इस से कुछ मतलब नही क्योंकि उसने कुरान के शिक्षा सिद्धांतों के प्रति अपना अनुदान प्रकट किया हुआ है। इसी प्रकार एक मसीही तब तक मसीही ही कहा जायेगा, जब तक वह इस बात को मानता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, वह कुवॉरी से उत्पन्न हुआ, सलीब पर चढ़ाया गया, मर गया और फिर जी उटा तथा वह मानव जाति का उद्धारकर्त्ता है - आदि आदि। (अर्थात में इस लौढिकिया के काल में ऐसे लोग होंगे जो स्वयं को इसलिये मसीही कहेंगे कि वे यीशु मसीही की अच्छी बातो व गुणों को स्वीकार करते हैं मगर उस के दिव्य परमेश्वरत्व को अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखते है। मसीही धर्म के पंडितो व वैज्ञानिकों ने पहले से ही ऐसा कर दिया है और प्रचारको की भीड़ 'सामाजिक - सुसमाचार' सुना - सुना कर यही सब कर रही है। आज वह एक नाम मात्र का मसीही बन

कर रह गया है, जो किसी गिरजे का सदस्य है। किन्तु वह सच्चा व आत्मिक विश्वासी नही है। उस तरह का विश्वासी तो वह है जिसने मसीह की देह में बपतिस्मा पाया है और जो उसी का भाग है। कुछ भी हो मगर यह परमेश्वर की आज्ञा है कि गेहूँ के साथ ऊटकटारों को भी उगते जाने देना और उन्हे उखाड़ कर फेकना नहीं। यह परमेश्वर की आज्ञा है। उन के बांधे जाने व जलाये जाने का समय आ रहा है- अभी नहीं आया है।

अत: पवित्रात्मा इस मिले-जुले झुन्ड़ से सम्बोधित है। एक ओर तो वह प्रशंसा कर रहा है और दूसरी ओर उन्हे ताड़ना दे रहा है। उसने बता दिया है कि सच्चा विश्वासी किन बातों में ठीक चल रहा हैं। अब वह झूंठी दाखलता को चेतावनी दे।

रहा है कि उन्हें परमेश्वर प्रभु की दृष्टि में न्यायोचित ठहरने के लिये क्या करना चाहिये।

वह स्त्री इज़ाबेल :-

प्रेरित याकूब ने अपनी पत्री १:२४-२४ में हमें पाप के बारे में बताया है कि वह किस प्रकार से हम में बढ़ता है। 'परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता हैं फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। ''अब देखिये कि कलीसियायी कालों में जो कुछ घटित हो रहा है, यह ठीक उसी का चित्र है। चूंकि पाप हानि रहित रूप में मात्र एक विचार बन कर उभरा था, अत: मृत्यु प्रथम कलीर्सिया काल में बड़े ही साधारण रूप में घुस गई और तब वह बस निकुलाईयों की शिक्षा मात्र थी। ''कामों व शिक्षा'' से बदल कर वह फिर सिद्धांत बन गई। सिद्धांतों से आगे बढ़ कर उसने राज्य की शक्ति को अपने घेरे में कसा और पागान विधियों को धर्म में मिला दिया। अब इस काल में यह अपनी भविष्यद्वक्तिन याने शिक्षक के द्वार आगे बढ़ती रही और अन्त में यह

आग की झील में पहुँचायी जायेंगी तथा वही जाकर पूरी तरह से समाप्त होगी जब दूसरी मृत्यु से मारा जायेगा।

अब ध्यान दें कि परमेश्व की पूरी चिल्लाहट जो कि इस चौथी कलीसिया में है वह इसी भविष्यद्वक्तिन इज़ाबेल की निन्दा करने के लिये हैं। और यह जानने के लिये कि परमेश्वर इस प्रकार से क्यों उस की निन्दा कर रहा है हमें उस के इतिहास को पवित्रशास्त्र में से देखना पड़ेगा और जब हम यह जान लें कि पीछे वहाँ पर उसने क्या किया था तब ही हम को पता चलेगा कि इस समय, इस काल में क्या हो रहा है।

प्रथम और अति महत्वपूर्ण बात जो हम इज़ाबेल के बारे में पाते हैं वह यह है कि वह इब्राहीम की पुत्री (वंश की) नहीं थी, न ही उसे इस्राएल के दस गोत्रों में रूप की तरह से, जो कि मुआबी जाति की थी, आत्मिक रीतिसे शामिल किया गया था। नही श्रीमान यह स्त्री सिदौनिदयों के राजा एतबाल की बेटी थी जो एश्तोरेत देवी का पुजारी था। (राजा १६:३२) वह अपने पूर्व अधिकारी फैलस को मार कर गद्दी पर बैठा था। अत: हम ठीक यही पाते हैं। कि यह इजाबेल एक कातिल की पुत्री थी। (इस से वास्तव में हमें कैन की घटना की याद आती है)। जिस रीति से वह इस्राएल में शामिल हुई वह परमेश्वर के द्वारा अभिषिक्त किया गया वह मार्ग नही था, जो उसने अन्य जातियों के प्रवेश के लिये ठहराया था। वन वह तो इस्राएल के दसो गोत्रों के राजा आहाब से विवाह के द्वारा इस्राएल में शामिल हुई थी। अब जैसा कि हम पाते है यह सम्बंध आत्मिक नही, पर राजनीति पर आधारित थे। अत: यह स्त्री, जो कि मूर्ति-पूजा में पूरी तरह से डूबी हुई थी इस के मन में लेशमात्र भी यह इच्छा नही थी कि वह एक सच्चे परमेश्वर की उपासक बने वरन वह तो मानो कसम खायी हुई इच्छा सहित यह सोच कर आयी थी कि इस्राएल को प्रभु से अलग कर दे। अब देखिये कि इस्राएल (दसो गोत्र) यह जानते थे कि सोने के बछड़े की पूजा करके उन्हे कितना लाभ हो सकता है, मगर अभी तक उन्होंने स्वयं को पूजा-पाठ-मूर्ति-पूजा के हाथो बेचा नही था क्योंकि

अभी तक वे परमेश्वर की उपासना करते व मूसा की व्यवस्था को मानतें थे। किन्तु आहाब के इज़ाबेल से विवाह करने के बाद, मूर्ति-पूजा बड़े भयानक रंग-ढंग से उन्नति करने लगी। जब यह स्त्री इज़ाबेल मंदिरों में पुजारिन की तरह पूजा करने लगी तब इसने एश्तोरेत (वीनस) व बॉल (सूर्यदेवता) के संघर्ष पूर्ण क्षण बन गये।

इन सभी बातों को मस्तिष्क में रख कर हम यह देखेगे कि पवित्रात्मा यहाँ इस थुआतीरा काल में किन तथ्यो को समझा रहा है - यहाँ देखिये।

आहाब ने इज़ाबेल से विवाह इसलिये किया कि वह राजनैतिक दृष्टि कोण से अपने राज्य को शक्तिशाली बना सके और उसे सुरक्षा प्रदान कर सके। ठीक ऐसा ही गिरजे ने तब किया जब उसने कानस्टैनटाईन के समय मे राज्य से विवाह किया। हालांक दोनो राजनैतिक कारणो से जुड़े थे मगर उन्होंने इसे आत्मिक मिलन की हवा दी। अब इस बात पर मुझे केई भी सहमत नही कर सकता कि कान्स्टैन्टाईन एक मसीही था। वह पागान धर्म को मानने वाला था जिस पर मसीही धर्म साज-संज्जा चढ़ी थी। उसने सिपाहियों के विजय-चिन्हों पर सलीबे अंकित करायी। वह 'नाईट ऑफ कोलम्बस' नामक एक भाई चारे पर आधारित परोपकारी कैथोलिक संख्या का संस्थापक था। उसमे संत सोफिया गिरजे के शिखर पर सलीब लगा कर एक नई प्रथा को जन्म दिया।

यह कानस्टैन्टाईन का ही विचार था कि सभी को याने पागान लोगो, नाम के मसीही लोगो, व सच्चे मसीही लोगो को एक साथ मिला दे और एक समय ऐसा था कि वह सफल हो गया है क्योंकि उस के बुलावे पर सच्चे विश्वासी भी यह सोच कर आये थे कि अपने उन भाईयो को, जो वचन से हट चुके है शायद वे वापस लौटा कर ला सके। जब उन्होंन देखा कि उन्हे वापस सत्य पर नहीं ला पा रहे है तो उन्होंने उस राजनैतिक सभा से अपना नाता तोड़ दिया और जब उन्होंने ऐसा किया तो उन्हे नास्तिक कहा गया और सताया गया।

मैं यह कहना चाहूँगा कि आज भी ठीक वैसी ही बात यहाँ हो रही है। लोग एक जगह एकत्रित हो रहे हैं। वे एक ऐसा पवित्रशास्त्र बना रहें हैं जो यहूदियों, कैथोलिक या प्रोटेस्टेन्ट सभी के उपयुक्त हो। उन के पास भी अपनी नाईसीन सभा है मगर वे उसे एक्यूमेनिकल सभा के नाम से पुकारते है। और क्या आप को मालूम है कि ये सारे संस्थाएं किस के विरुद्ध लड़ रही है? वे सच्चे पेन्तेकोस्तल लोगों के विरुद्ध लड़ रही हैं। यहाँ मेरा मतलब उस संगठित गिरजे, पेन्तेकोस्तल नाम के गिरजे से नही हैं वरन उन से है जो वास्तव में पिन्तेकोस्तल है क्योंकि वे पवित्रात्मा से भरे है और उन के मध्य में चिन्ह और वरदान प्रकट होते हैं क्योंकि वे सत्य प्रकाश में चल रहें हैं।

जब आहाब ने राजनैतिक कारणों से इज़ाबेल से विवाह किय तो उसने अपना जन्म का अधिकार खो दिया, बेच दिया। जब आप किसी नामधारी संस्था-डिनोमिनेशन्स के सदस्य बनते है तो आप ऐसा करके अपना जन्म का अधिकार बेच देते है। मेरे भाई चाहे आप माने या न माने यह बात ठीक है। प्रत्येक प्रोटेस्टेन्ट शाखा जो रोमन कैथोलिक से बाहर आयी और फिर उसी के अन्दर वापिस चली गई, उसने अपने जन्म का हक बेच दिया। जब आप अपने जन्म का पहलौठे का अधिकार बेच देते है तो आप की स्थिति एसाव जैसी हो जाती है। फिर चाहे आप कितना भी पश्चाताप करे-चिल्लाये आप का कुछ भी भला नही होगा आप केवल एक काम कर सकते है और वह है कि "मेरे लोगों उस में से निकल आओ और उस के पापो में भागीदार मत बनो।" अब यदि आप यह नही मानते हैं कि मैं सच कह रहा हूँ तो मेरे इस प्रश्न का उत्तर दीजिये। क्या कोई भी इस धारा का जीवित मनुष्य मुझें बता सकता है कि किस गिरजे में परमेश्वर ने बेदारी जगायी और कब कौन सा गिरजा एक बार नामधारी गिरजा बनने के बाद उस मे से वापस बाहर लौट कर आया? इतिहास को पढ़ कर देखिये-आप को एक भी नही मिलेगा - एक भी नहीं।

जब इस्राएल ने दुनिया के साथ संम्बध स्थापित किया तब मध्य रात्रि का समय था और उसने राजनीति के लिये आत्मिक पक्ष को छोड़ दिया। नीसिया में भी मध्य रात्रि का समय था जब कलीसिया ने भी ऐसा किया। और यह भी मध्य रात्रि का समय है जब बाकी सभी गिरजे एक जगह एकत्रित हो रहें हैं।

अब देखिये कि जब आहाब ने इज़ाबेल से विवाह किया तो उसने उस राज्य को धन देना मंजूर किया और स्वीकृति दी कि एश्तोरेत व बॉल के लिये दो बड़े मंदिर बनाये जायें। एक जो कि बॉल के लिये (सूर्य देवता) बनाया गया वह इतना विशाल था कि सारा इस्राएल उस में एक साथ जमा होकर उस की पूजा कर सकता था। और जब कान्स्टैनटाईन व गिरजे का विवाह हुआ तो उसने उन्हें (गिरजो को) गिरजों के बड़े-बड़े भवन दिये-उन में वेदियों, मूर्तियों की स्थापना करी और धर्म की शासन पद्धति का संगठन किया जो कि तब पहले से ही अस्तित्व में आने लगी थी।

जब इज़ाबेल के पीछे राज्य की शक्ति आ गई तो उसने अपने धर्म को लोगो पर जबरन थोपना शुरु किया और परमेश्वर के याजको व भविष्यद्धक्ताओं को घात किया। स्थिति इतनी अधिक बुरी हो गई कि ऐलिय्याह ने जो उस के समय का नबी था यह समझा कि बस केवल वही एक जन बचा रह गया है किन्तु परमेश्वर ने ७००० और ऐसे लोगो को बचा कर रखा था जिन्होने बॉल के आगे घुटने नही टेके थे। और आज भी इन नामधारी रिगजो, बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट, प्रिसबिटेरियन आदि में कुछ ऐसे लोग है जो उन में से बाहर आकर वापस परमेश्वर की ओर फिरेंगे मैं आप को यह बताना चाहता हूँ कि मैं न तो अभी और न ही कभी लोगो के विरुद्ध हूँ - मैं तो डिनोमिनेशन-संस्थागत नामो वाले गिरजो के तंत्र या रीति-रिवाजो के विरुद्ध हूँ। मुझे इन के विरुद्ध होना ही है क्योंकि परेमश्वर इन से घृणा करता है।

आईये हम कुछ क्षणों के लिये यही रुक कर उन बातो को दोहराये जो हम ने थुआतीरा काल में चल रही उपासना के संम्बध में जान ली हैं। मैंने कहा था कि वे लोग, अपने राजा समेत 'अपोलो' (सूर्य देवता) की पूजा कर रहे थे। इस अपोलो को, बुराई दूर करने वाला कहा जाता था। व लोगों से बुराई को दूर करता था। वह उनको आशीषें देने वाला वास्तविक ईश्वर बताया जाता था।

उस से लोग आशा करते थे कि वह उन्हे धर्म की शिक्षा दे। उस ने लोगो को पूजा करने, मंदिर की विधियां, ईश्वर की सेवा का तरीका, बलिदान चढाने संम्बधी ज्ञान, मृत्यु व मृत्यु के बाद जीवन की ज्ञान की बातें सिखायी और यह सब शिक्षा लोगों को वह एक भविष्यद्धूक्तिन के माध्यम से देता था जबकि वह अपनी तिपहिया कुर्सी पर बैंठ कर सम्मोहित अवस्था में उपदेश देती थी। हे प्रभु क्या आप क्यों को देख रहे है? यहाँ वही भविष्यद्धूक्तिन बैठी है और लोगो को शिक्षा दे रही है जिसे इजाबेल कहा जाता है और उस की शिक्षा लोगो को बहका रही है, परमेश्वर के सेवको को भरमा रही है उनके और व्यभिचार का कारण बन रही है अब देखिये कि व्यभिचार का अर्क मूर्ति पूजा है। इस का आत्मिक अर्थ यही है यह एक अवैध मिलन का नाम है। आहाब व कान्स्टैन्टाईन दोनों के अपने अपने मिलन अवैध थे। दोनो ही ने आत्मिक रीति से व्यभिचार किये थे। प्रत्येक व्यभिचारी का अन्त आग की झील है - परमेश्वर ने ऐसा ही कहा है।

अब देखिये कि कैथोलिक चर्च (चर्च या कलीसिया को स्त्री की संज्ञा दी गई है - चर्च स्त्रीलिंग है) परमेश्वर के वचन का इंकार करता है। आज पोप, जो आधुनिक संस्करण में छिपा ''अपोलो'' ही है उसने लोगो को मूर्ति-पूजा में शामिल होने की शिक्षायें दी है और यह रोमन कैथोलिक गिरजा झूंटी भविष्यद्धूक्तिन बन गई क्योंकि उसने लोगे से प्रभु का सत्य वचन छीन लिया है और उन पर अपने विचार थोप दिये

है। उसने अपने ढंग से लोगो को 'पापो के क्षमा का तरीका, परमेश्वर से आशीषे पाने की विधियाँ' सिखायी है। उन के धर्माध्यक्ष इस सीमा तक झूंठ बोले है कि वे न केवल इस जीवन में वरन इस के वाद मृत्यु मे भी प्रायशिचत किया ज़ाता है जबकि वचन ऐसा कुछ नही बताता। वे सिखाते हैं कि प्रार्थनाए, उन की प्रार्थना-समाएं तथा धन आप को प्रायशिचत बिना ही स्वर्ग में स्थान दिला देगी। उस की शिक्षाओ पर आधारित यह सारा तंत्र ही है। उन का तंत्र, रीतियां विधियां परमेश्वर के वचन के प्रकाशन पर आधारित नही है वचन रेत की तरह से बह जाने वाले पैशाचिक झूंठ पर टिके है।

वह रोमन कैथोलिक गिरजा पहले संगठित हुआ फिर सीधे नामधारी संस्थागत गिरजे में बदल गया तथा उस के बाद झूठी शिक्षाएं देने में लिप्त हो गया। रोमन कैथोलिक लोग इस में विश्वास नही करते कि परमेश्वर अपने वचन में पाया जाता है, नही श्रीमान! यदि वे ऐसा मानेंगे तो उन्हे पश्चाताप करके फिर से वचन में लौटना पड़ेगा मगर वे तो यही मानते व कहंते है कि परमेश्वर अपने गिरजे में पाया जाता है।

यदि ऐसा होता तो पवित्रशास्त्र रोमन कैथोलिक चर्च का इतिहास बन जाता मगर ऐसा नही है। देखिये कि जल द्वारा बपतिस्मा दिये जाने की एक बात पर उन्होंने क्या किया। उन्होंने उस को मसीही बपतिस्में से बदल कर पागान धर्म की उपाधियों वाले बपतिस्में में बदल डाला। आईये मैं आप को एक निजी अनुभव बाताता हूँ जो मुझे कैथोलिक पादरी से मिला। एक लड़की जिसे मैंने कभी बपतिसमा दिया था बाद में कैथोलिक बन गय थी। अत: कैथोलिक पादरी उस लड़की के संम्बध में मेरा साक्षात्कार लेना चाहते थे। उन्होंने पूछा कि उस लड़की को किस प्रकार का बपतिस्मा दिया था। मैंने उन को बताया कि मैंने उसे वही एकमात्र मसीही बपतिस्मा दिया है जिसे कि मैं जानता हूँ। मैंने उसे जल में डुबो कर प्रभु यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया है। उस पादरी ने टिप्पणी करी कि एक समय था जब कैथालिक चर्च भी ऐसे ही बपतिस्मे देता था

मैने तुरन्त उन से पूछा कि बतायें कब कैथोलिक चर्च ने ऐसा किया था, क्योंकि मैंने कैथोलिक चर्च का इतिहास पढ़ा था और उस पादरी के कथन को कही भी नही पाया था। उसने मुझे बताया कि यह बपतिस्मा और यह बात पवित्रशास्त्र में दी गई है - और यीशु ने ही कैथोलिक चर्च को संगठित किया था। मैंने उन से पूछा कि क्या वे यह समझते है कि पतरस ही उस गिरजे का प्रथम पोप था। उन्होंने जोर देकर कहा कि पतरस ही वास्तविक पहला पोप था। मैंने उन से पूछा कि क्या सामूहिक प्रार्थनाऐं इसीलिये लैटिन भाषा में पढ़ी जाती थी ताकि वे अपने मूल स्वरूप में सही रीति से बनी रहे और कभी न बदलें। उन्होंने कहा कि यह बात सच है। मैंने उन से कहा कि मैं सोचता था कि वे लोग अपने शुरू के विश्वास से बहुत परे चले गये थे। मैंने उन से यह भी कहा कि यदि कैथोलिक चर्च प्रेरितों के काम नामक पुस्तक की बातों पर वास्तव में विश्वास करता था, तो मैं तो पुराने ढंग का कैथोलिक व्यक्ति हूँ। उन्होंन मुझे से कहा कि पवित्रशास्त्र स्वयं कैथोलिक गिरजे के कामों का विवरण व अभिलेख है और परमेश्वर अपने गिरजे में पाया जाता हैं मैंने उनकी इस बात पर अस्वीकृति प्रगट करी कि परेमश्वर गिरजे में पाया जाता था क्योंकि परमेश्वर तो अपने वचनों में होता है। परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूंठा ठहरे। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि यदि आप उस के वचन की पुस्तक में कुछ जोड़े तो वे उन विपत्तियों को आप पर बढ़ा देगा और यदि उस में से कुछ घटा दें तो वह आप का भाग जीवन की पुस्तक में से घटा देगा। प्रकाशित २२:१८,११ ऐसा ही बताता है।

आईये मैं आपको बताऊँ कि रोमन कैथोलिक गिरजा किस प्रकार से ऐसा विश्वास करता है कि परमेश्वर अपने वचनों के बजाये, गिरजे में पाया जाता है यहाँ पर मैं पोप जोन २३वें की डायरी से कुछ अंश दे रहा हूँ : 'मैं परमेश्वर के भय से थरथराते - काँपते हुए, पापे के रूप में अपने तीन वर्षों के अनुभव के आधार पर यह कहता हूँ कि मैंने इस पद के सेवकाई का प्रभु की उस इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होने के कारण कबूल

किया है, जो उसने रोमन कैथोलिक धर्माध्यक्षों की पवित्र महासभा में गुप्त भेंट में मुझ पर प्रकट करी थी। वह ही इस बात की मेरे लिये गवाह है और वही निरन्तर बहते रहने वाला प्रेरणा स्त्रोत व कारण है कि मैं उस के प्रति सदैव सच्चा बना रहकर परमेश्वर में भरोसा करू और वर्तमान व भविष्य संम्बंधी सभी बातो पर पूरा भरोसा किये रहूँ। 'यह पोप, यह बता रहे है कि परमेश्वर ने अपनी मंशा गिरजे के द्वारा बताई या उस का प्रकाशन दिया। कितनी झूंठ बात है परमेश्वर अपने वचन में होता है और वह अपनी इच्छा अपने वचन कहकर ही प्रकट करता है। पोप ने यह भी कहा था कि वह पूरी तरह से मनुष्यों के वचनो पर भरोसा करता है और इसी को बिना टीका टिप्पणी मानता हैं। यह सब कुछ सुनने में तो बहुत सुन्दर लगता है मगर यह सब कितनी झूठी बातें है। ठीक उसी तरह उसे अदन की बाटिका में सुन्दर ढंग से दोष आया था।

अब आईये प्रकाशित वाक्य १७ में हम इस स्त्री, इस झूंठी कलीसिया को देखे जो परमेश्वर के वचन को त्याग कर झूंठी भविष्यवाणियों पर चल रही थी। पहले पद में परमेश्वर इस स्त्री को बडी वैश्या कह रहा था। वह 'वैश्या क्यों है? इसलिये कि वह मूर्ति-पूजा में लिप्त है। उसने लोगो को भी उसी में जकड़ लिया है। मूर्ति-पूजा का इलाज क्या है? परमेश्वर का वचन हैं। अत: यह स्त्री इसलिये वैश्या है क्योंकि इसने वचन को छोड़ दिया है। यहाँ पर यह स्त्री बहुत से पानियों पर बैठी है जिसका मतलब बहुत से लोग है। वास्तव में इस को झूंठा गिरजा ही होना चाहिये क्योंकि पमेश्वर की कलीसिया में तो थोड़े से लोग ही होते है - बहुत कम लोग होंगे जो इस को पा सकेंगें।

इस बात पर ध्यान दीजिये कि परमेश्वर की दृष्टि में यह स्त्री कैसी है भले ही लोगो की नजर में कितनी ही अद्भुत क्यों न दिखाई दे - चाहे उस का स्वरूप कितना भी दार्शनिक क्यो न प्रतीत हो। वह अपने व्यभिचार की दूषित मदिरा में मदहोश है। अब वह शहीदों के खून को पीकर मतवाली हो रही है ठीक उसी तरह जिस तरह इजाबेल थी जब

उसने भविष्यद्धूक्ताओ याजको व परमेशवर के उन लोगो को मार दिया था। जो बाल देवता के सामने उसकी उपासना करने को नही झुके थे। और ठीक ऐसा ही कैथोलिक गिरजे ने भी किया। उन्होने उन लोगो की हत्याऐं करी जिन्होने पोप के शासन के सामने झुकने से इंकार किया। जो मनुष्यों के शब्दों को नही वरन परमेश्वर का वचन चाहते थे उन्हे मार डाला गया और अधिकतर उन्हें क्रूरतम डंग से घात किया गया। किन्तु यह गिरजा जो लोगो को घात कर रहा था, स्वयं भी मृत था और इस बात को जानता नहीं था। उस में कुछ भी जीवन नही था और कभी भी जीवन का कोई भी चिन्ह उस मे प्रकट नही हुआ।

पश्चाताप का अवसर :

प्रकाशित वाक्य २:२१-२२ मैंने उस को मन फिराने के लिये अवसर दिया, पर वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नही चाहती।'' क्या आप इस बात को जानते है कि वास्तव में यह ('रोमन कैथोलिक' गिरजा अहाब से अधिक दुष्ट था। क्या आपने कभी सुना कि यह पश्चाताप करके परमेश्वर के आगे ठीक चाल चला? नही आप रोमन कैथोलिक गिरजे के लिये ऐसा नही कह सकते। नही श्रीमान उसने कभी पश्चाताप नही किया और उल्टे उन सभी बलपूर्वक नष्ट किया - घात किया, जिन्होने यह चेष्टा करी कि यह गिरजा अपने व्यभिचार के लिए पश्चाताप करे। यह तो इतिहास है। अब देखियें कि परमेश्वर ने प्रत्येक कलीसिया काल में न केवल सुसमाचार - दूत खड़े किये वरन उसकी सहायता करने के लिये अद्भुत सेवकों को भेजा। उसने प्रत्येक काल मे अपने कुछ अद्भुत सेवको को भेजा ताकि वे सभी तरह की चेष्टाऐं करके इस गिरजे को फिर से परमेश्वर की ओर फेर सके। परमेश्वर ने वास्तव में उस को पश्चाताप करने का अवसर दिया और इस के लिये सहायता भी प्रदान करी। क्या कभी उसने पश्चाताप किया और अपने फालो से उसने मन फिराने की पुष्टि करी? नही श्रीमान? न ही उसने कभी ऐसा किया है और न ही

वह कभी ऐसा करेगी। वह मतवाली है और आत्मिक बातो की समझ खो बैठी है।

अब आप भ्रमित होकर यह मत सोचना कि रोम के गिरजे ने संतो के कत्ल करने के कामो पर पश्चाताप कर लिया है क्योंकि वह अब प्रोटेस्टेन्ट गिरजो के साथ मिलने की चेष्टा कर रहा है और अपने माते व सिद्धांतों को प्रोटेस्टेन्ट मतो व सिद्धांतों के अनुसार बना रहा है। उस ने एक बार भी इस बात के लिये क्षमा नही मॉगी कि उसने उन सामूहिक हत्याओ को करके गलती करी थी। न ही वह ऐसा करेगी इससे कुछ मतलब नही कि इस विशेष आज में वह कितनी मीठी मिलनसार दिखाई दे रही है, फिर भी वह उठेगी और लोगो को घात करेगी खून करना उसके दुष्ट व बिना पश्चाताप वाले हृदय में छिपा है।

वैश्या के विरुद्ध दंड की घोषणा :

प्रकाशित वाक्य २:२२-२३ देख ''मैं उसे खाट पर डालता हूँ और जो उसके साथ व्यभिचार करेत है यदि वे भी उस के कामो से मन न फिरायेंगे तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा। आर मैं उस के बच्चों को मौत से मार डालूँगा और तब सब कलीसियायों जानलेगी कि हृदय और मन का परखने वाला मै ही हूँ: और मै तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूँगा''। 'यह क्या बात है? क्या इस स्त्री के बच्चे है? और वह स्वयं वैश्या है? यदि मामला ऐसा है कि वेश्यावृत्ति के कारण उस के बच्चे है तो फिर उस को वचनानुसार आग में ही जलाया जाना है। यह बात एकदम ठीक है। यही उस का अंजाम होगा कि वह आग में जलायी जाये। उस का अन्त आग की झील है। किन्तु एक क्षण रुक कर उसके बच्चो के बारे में सोचिये। एक स्त्री के द्वारा ही संतान उत्पन्न होती है। इस बात का प्रमाण है कि इस स्त्री के बच्चे हैं जो उसी से उत्पन्न हुए किन्तु उन्होंने भी वही किया जो उस स्त्री ने किया था। मुझे कोई एक गिरजा ऐसा दिखाईये जो उस संस्थागत में न ढला हो। एक भी ऐसा गिरजा

नही है एक भी नही। लुथीरियन्स उन में से बाहर आये और फिर संगठित होकर नामधारी गिरजे में बढ़ल गये और आज वे एक्यूमैनिकल आन्दोलन में फिर से उन्ही से हाथ मिलाये बैठे है। मैथोडिस्ट बाहर आये और फिर से संस्था में ढ़ल गये। पिन्तेकोस्तल बाहर आये और फिर से उन्होंने नामधारी गिरजा बना लिया। अब एक और बाहर आने की प्रक्रिया शुरु हो चुकी है और इस बार बाहर आयी कलीसिया दोबारा संस्थाओ में नही ढ़लेगी परमेश्वर की प्रशंसा हो। क्योंकि वह सच्चाई को जानती है। यह मंडली अन्त समय की दुल्हन होगी।

अब देखिये कि यहाँ यह कहा गया है कि इस वैश्या के बच्चे थे। वे क्या थे? वे उस की बेटियाँ थी क्योंकि वे उसी की तरह के गिरजे थे। अब यहाँ एक बड़ी मनोरंजक बात पैदा होती है। इज़ाबेल और आहाब की एक बेटी थी और उस का विवाह यहोशापेत के पुत्र यहोराम के साथ हुआ था जिस के बारे में राजा ८:१८ में यूँ लिखा है कि 'वह इस्राएल के राजाओ की सी चाल चला, जैसे आहाब का घराना चलता था, क्योंकि उसकी स्त्री आहाब की बेटी थी और वह उस काम को करता था जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। 'इस विवाह के फल स्वरूप वह सीधे मूर्ति पूजा में चला गया। उसने परमेश्वर से डरने वाले और परमेश्वर की उपासना करने वाले यहुदा को मूर्ति पूजा में डाल दिया।

जैसा कि मैं आप को बता चुका हूँ यही सब इन पुत्रियों रूपी गिरजो ने भी किया। उन्होंने सच्चाई से अपना जीवन शुरु किया और फिर संस्थागत होकर विवाह रचाया और विधियों मतो आदि के लिये परमेश्वर के वचन को छोड़ दिया। अब मैं इस बात को खुल कर समझाता हूँ। इब्रानियों १३:७ में कहा गया है कि 'जो तुम्हारे अगुवे थे और जिन्होने तुम्हे परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हे स्मरण रखो और ध्यान से उन के चाल चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। 'यह तो वचन ही है जो हम पर शासन करता है मनुष्य नही। अब देखिये कि

एक पुरुष हाने के नाते पुरुष का स्त्री के ऊपर अधिकार होता है। वह उस पर शासन करता हैं किन्तु कलीसिया भी एक स्त्री हैं जिसका शासक वचन हैं और वचन 'यीशु हैं। यदि वह वचन को अस्वीकार करके किसी और को अपने ऊपर अधिकारी टहराये तो वह व्यभिचारिणी है। अब आप मुझे कोई एक गिरजा गिनाऐं जिसने मतो व मनुष्यो के बनाये सिद्धांतों के लिये वचन को न छोड़ा हो। वे सभी व्यभिचारिणी है - जैसी माँ वैसी ही बेटियाँ है।

इस वैश्या और उस के बच्चो को दंड मिलेगा? देखिये कि यह तो दोहरा या दो तरीके का होगा। उसने कहा था कि, 'मैं उसे खाट पर डालता हूँ। 'पद २२ के अंतिम भाग के अनुसार वह तो क्लेशों की खाट होगी या घोर क्लेश का समय होगा। यह ठीक वही वचन है जो यीशु ने मत्ती २५:१-२३ में कहा है। वहाँ दस कुवारियाँ थी जिन में पाँच बुद्धि मान व पाँच मूर्ख थी। पाँचों बुद्धिमान कुवांरिया के पास तेल था (पवित्र आत्मा था) जबकि पाँच मूर्खों के पास नही था। जब यह पुकार हुई कि देखो दुल्हा आ गया तो पाँच मूर्ख कुवारियाँ तेल की खोच में चली जबकि पाँच बुद्धिमान कुवारियाँ विवाह के मंडप में प्रवेश कर गयी। वे पाँच जो रह गई थी वे घोर क्लेश के समय मे डाली गई। ठीक ऐसा ही उन सभी के संग होगा जो दुल्हन के रूप में उठाये नही जायेगे। ऐसा ही उस वैश्या और उस की बेटियों के संग होगा। दूसरी बात वह यह कह रहा है कि मै उन्हे मौत से मारूँगा या उसका शब्दिक अर्थ यह होगा कि उन्हे मृत्यु में डाला जायेगा कि मृत्यु उन्हे मारे। 'यह अजीब बात कही गई है। हम यह कह सकते है कि 'एक मनुष्य को फाँसी देकर मारा जाये या बिजली के झटको के द्वारा या किसी अन्य रीति से मारा जाये किन्तु यहाँ तो कहा गया है कि उन्हे मौत में डाल कर मौत से मारा जायेगा। मृत्यु तो स्वयं उन की मृत्यु का कारण है। अब मैं चाहता हूँ की आप इस को साफ तौर पर पूरी तरह से समझ ले, इसीलिये मैं फिर से इज़ाबेल की पुत्री की उदाहरण दूँगा जिस का विवाह यहुदा के गोत्र में हुआ था तथा जिसने

उस को मूर्ति पूजा में डाल कर परमेश्वर करे बाध्य किया था कि वह यहुद्दा को मौत में डाल दें। यही बिलाम ने भी किया था। अत: यहाँ इज़ाबेल है जो अपने पागान धर्म में लिप्त है। उधर वहाँ यहुद्दा था जो परमेश्वर की उपासना करता और उस के वचन में जी रहा था। अत: इज़ाबेल ने अपनी पुत्री का विवाह यहोराम से कर दिया। जिस क्षण ऐसा हुआ तभी यहोराम अपने लोगो की मूर्ति-पूजा का कारण बन गया। जिस समय वह विवाह हुआ उसी समय यहुद्दा मर गया था। उस की आत्मिक मृत्यु हो चुकी थी। जब रोम का प्रथम गिरजा संगठित या संस्थागत बना तो वह मर गया। जिस क्षण लूथीरियन संस्थागत गिरजे में ढ़ले वे मर गये - मृत्यु उन में समा गई। अन्त में पिन्तेकोस्तल आये और वे भी नामधारी संस्थागत गिरजों में बदल गये और पवित्रात्मा उन्हे छोड़ कर चला गया, हालाकि वे इस बात का विश्वास नही करते है। मगर परमेश्वर ने यही किया है। उनका वह विवाह उनमें मृत्यु ले आया। तब उसके बाद परमेश्वरत्व में 'एक' ही परमेश्वर के होने का प्रकाश आया और 'वन-नैस' वाले आये, संस्थागत बन कर मर गये। तब १९३३ में जब परमेश्वर का आग का स्तून उतर आया तो पूरी दुनिया में दिव्य चंगाई की बेढारी फैल गई मगर यह सब कुछ किसी भी संस्थागत गिरजे के द्वारा नही आया था। परमेश्वर पिन्तेकोस्तल समूहो तथा सभी संस्थागत गिरजों से बाहर आकर यह सब कर रहा था और भविष्य में भी जो कुछ वह करेगा, वह संस्थाओं से बाहर ही करेगा। परमेश्वर मृतकों के द्वारा कुछ नही करता है। वह केवल आत्मिक रीति से जीवित लोगो में ही काम करता है और वे जीवित लोग बाबुल से बाहर आ चुके है।

अत: आपने देखा कि 'मृत्यु' या 'संस्थागत' बनना वहाँ आया और गिरजे मृत हो गये। यदि इस को और सरल ढंग से कहा जाये तो मृत्यु वहाँ उनमे वास करने लगी जहाँ थोड़ देर पहले जीवन था। जिस प्रकार वह मूल हव्वा पूरी मानव जाति के लिये मृत्यु ले आयी थी, वैसे ही अब संस्थागत गिरजों में ढ़लना मृत्यु को ले आया है क्योंकि वह संगठित या

संस्थागत बनने का विचार दो भ्रष्ट विचारों की उपज है जो कि निकुलाईयों की शिक्षा व विलाम की शिक्षा से पैदा हुआ और जिस को झूठी भविष्यद्वक्तिन इज़ाबेल ने प्रचार किया। अब देखिये कि हव्वा को उस भयानक कृत्य के लिये सर्प के साथ भस्म कर देना चाहिये था। किन्तु बीच में आदम ने आकर शीघ्र ही बात अपने पर ले ली ताकि उसे बचाया जा सके। किन्तु जब यह शैतानी धर्म पूरे समय व काल को पार कर जायेगा, तो फिर बीच में आने वाला कोई नही होगा और उसे आग में जलाया जायेगा। साथ ही उसके बहकाने वाले, वह वैश्या, उस के बच्चे, मसीह विरोधी और शैतान सभी का अंतिम स्थान वह आग की झील ही होगा। ठीक यहाँ पर मैं यह सोच रहा हूँ कि मैं उस विषय को कहूँगा जो कि अंतिम कलीसिया काल में कहना चाहिये। मगर मुझे उन बातों का उल्लेख यहाँ करना ठीक जान पड़ रहा है क्योंकि यह संस्थाओ और उन से पैदा होने वाले प्रभावो को बहुत साफ तौर पर उजागर करने वाली बातें है। मैं आप को चेतावनी देना चाहता हूँ। प्रकाशित वाक्य अध्याय १३:१-१८ में यूँ लिखा है:-

और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा जिस के दस सींग और सात सिर थे, और उस के सींगों पर दस राजमुकुट और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हये थे। और जो पशु मैंने देखा, वह चीते की नाई था, और उस के पाँव भालू के से, और मुँह सिंह का सा था, और उस अजगर ने अपनी सामर्थ, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार उसे दे दिया। और मैंने उस के सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा मानो वह मरने पर है, फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे पीछे अचम्भा करते हुए चले। और उन्होंने अजगर की पूजा की क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था आर यह कहकर पशु की पूजा की, कि इस पशु के समान कौन है? कौन उस से लड़ सकता है? और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुंह दिया गया, और उसे बयालीस

महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया। और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुंह खोला, कि उस के नाम और उसके तम्बू अर्थात स्वर्ग के रहने वालो की निन्दा करे। और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगो से लड़े, और उन पर जय पाये, और उसे हर एक कुल और लोग और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। और पृथ्वी के वे सब रहने वाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नही गये, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे। जिस के कान हो वह सुने। जिस को कैद में पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जायेगा, पवित्र लोगो का धीरज और विश्वास इसी में है।"

फिर मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उस के मेम्ने के से दो सींग थे। और वह अजगर की नाई बोलता था। और यह उस पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता था, और पृथ्वी और उस के रहने वालो से उस पहले पशु की, जिसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था। और वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। और उन चिन्हों के कारण जिन्हे उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था, वह पृथ्वी के रहने वालों को इस प्रकार भरमाता था, कि पृथ्वी के रहने वालें से कहता था, कि जिस पशु के तलवार लगी थी, वह जी गया है, उसकी मूरत बानओ। और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे, और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करे, उन्हे मरवा डाले। और उसने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास सब के दाहिने हाथ, या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात, उस पशु का नाम, या उस के नाम का अंक हो, और कोई लेन-देन न कर सके। ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उस का अंक छः सौ छियासठ है।"

यह अध्याय रोमन कैथोलिक गिरजे की शक्ति को दिखाता है और यह भी कि वह अपने संस्थागत गिरजे के द्वारा आगे क्या-क्या करेगी। याद रहे कि यह झूंठी दाखलता है, चाहे उस ने प्रभु का नाम ही क्यो न ले लिया हो - वह उस का नाम झूठा ले रही है। उस का अधिपति प्रभु नही है वरन शैतान है। अंत में इस की पहचान पूरी तरह से पशु के संग होगी। किरमिजी रंग के पशु पर बैठी हुई वह वैश्या, स्पष्ट तौर से उस की शक्ति को प्रकट कर रही है कि उस का बल शैतान की ओर से है और वह हमारे परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह की ओर से नहीं हैं। पद १७ में जोर देकर यह कहा गया है कि वह इस धरती के सारे वाणिज्य, याने लेन-देन करने का अधिकार अपने हाथ में ले लेगी क्योंकि उस के बिना न कोई कुछ खरीद सकेगा और न ही बेच सकेगा। यह सारी बातें प्रकाशित वाक्य १८:१-१७ में कही गई है जिस से इस के संम्बधों का पता चलता हैजो विभिन्न राजाओं, राजकुमारों, व्यापारियों के साथ है, और जिन्हे रोम व वाणिज्य से संम्बध बनाने ही पड़ेंगे।

प्रकाशित वाक्य १३:३४ में हम पाते है कि उस पशु ने अपना प्रभाव उस मूरत के द्वारा फैलाया जो उस के लिये बनायी गई थी। वह मूरत जो बनायी गई थी वह विश्व स्तर पर बनायी गई आज की एक्यूमैनिकल सभा ही है जिसका अर्थ है सभी गिरजों की एक महासभा - याने इस में सभी नामधारी गिरजे रोमन कैथोलिक गिरजे के साथ एक मंच पर आ जायेंगे। (आज वे ऐसा ही कर भी रहे हैं) इस बात की सम्भावना है कि इस संघ के द्वारा वे साम्यवाद की ताकत व बढ़ोत्तरी को रोक देंगे। किन्तु नबुकदनेस्सर की मूर्ति के समान, चूंकि साम्यवाद को इसी लिये उठाया गया है कि वह इस वैश्या की देह को भस्म करे, तो रोम पर उसकी विजय होगी और रोम बरबाद हो जायेगा। इस बात पर ध्यान दे कि जहाँ जहाँ रोमन गिरजे पहुँचे वही पर पीछे से साम्यवाद भी पहुँचा। इस को इसी तरह से होना था। और मैं आप को एक चेतावनी अब दे रहा हूँ कि यह मत सोचने लगा कि साम्यवाद आप का एकमात्र शत्रु है। नही श्रीमान -

यह कैथोलिक चर्च भी आप का शत्रु है और साम्यवाद से कही अधिक रूप में शत्रु है।

अब आईये हम प्रकाशित वाक्य १३:१-४ पढ़े और इसे प्रकाशित वाक्य १२:१-५ से मिलाकर देखें। प्रकाशित वाक्य १३:१-५ में लिखा है कि, "और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसे के दस सींग और सात सिर थे और उस के सींगो पर दस राजमुकुट और उस के सिरो पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे। और जो पशु मैंने देखा वह चीते की नाई था, और उस के पॉव भालू के से, और मुंह सिंह का सा था, और उस अजगर ने अपनी सामर्थ और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार उसे दे दिया। और मैंने उस के सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा मानो वह मरने पर है, फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे पीछे अचम्भा करते हुए चले। और उन्होंने अजगर की पूजा की क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था और यह कहकर पशु की पूजा की, कि इस पशु के समान कौन है? कौन उस से लड़ सकता है? अब प्रकाशित वाक्य १२:१-५ देखिये,'फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात एक स्त्री जो सूर्य ओढे हुए थी, और चाँद उसके प्राव तले था. और उस के सिर पर बारह तारों का मुकुट था और वह गर्भवती हुई और चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी हैं, और वह बच्चा जनने की पीड़ा उसे लगी हैं, और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी। और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया। और देखो एक बड़ा लाल अजगर था जिस के सात सिर और दस सींग थे, और उस के सिरों पर सात राजमुकुट थे और उसकी पूछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई का खींच कर पृथ्वी पर डाल दिया। और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाये। और वह बेटा जनी जो लोहे का राजदन्ड लिये हु सब जातियों पर राज्यकरने पर था,

और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास, और उस के सिहासन के पास पहुँचा दिया गया। 'इन दोनो ही पशुओं में शैतान व उस का शैतानी धर्म मौजूद है। प्रकाशित वाक्य १४ दिया गया पशु, जिस को प्राणघातक घाव लगा था और वह जी गया था वह शाही पागान रोमन राज्य था जिसने कि जंगली जाति के लोगों ने तहसनहस कर दिया था और इस प्रकार पागान रोम ने अपनी धार्मिक शक्ति खो दी थी। मगर उस ने फिर से असल शक्ति को पोप - शाही रोम के द्वारा पा लिया। क्या आप इस बात के देख पा रहे है? वह राज्य जिसने सभी का नाश करके कुचल कर शासन किया था और जो कि सब से अधिक शक्तिशाली कहा जाता था, अन्त में उसी को प्राणघातक घाव लगा था। उस की भौतिक सैन्य शक्ति जिस से वह दूसरो पर शासन करता था, वह समाप्त हो गई थी। किन्तु कान्स्टैनटाईन के समय मे वह फिर से जीवन पा गया क्योंकि पोप शाही जो पूरी दुनिया पर छा गया और उस की शक्ति असीम बन गई है। वह अब राजाओ व व्यापारियों को प्रयोग में लाने लगी और अपने घातक धर्म व धन-सामर्थ के बल पर वह इस वर्तमान काल में एक देवी की तरह से अपना शासन चला रही है। वह ही वह अजगर है जो उस स्त्री के बेटे को निगल जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। हेरोदियस ने प्रभु यीशु मसीह को मार डालना चाहना मगर वह सफल नही हों पाया। बाद में यीशु को रोमन सिपाहियों ने क्रूस पर चढ़ा दिया मगर आज वह स्वर्ग में सिंहासन के पास है।

अब इन बातों के संग ही जो मैंने अभी बतायी है, आप देनियेल के स्वप्न को भी याद कीजिये। उस मूर्ति का अंतिम भाग अर्थात दुनिया की अंतिम शासनात्मक शक्ति पांव में दिखाई गई थी वे मिट्टी व लोहे से बने थे। देखिये कि लोहा रोमन राज्य है किन्तु अब वह ठोस लोहा नही रहा गया है। उस में मिट्टी मिली हुई है। फिर भी वह अस्तित्व में है और दुनियां के प्रजातंत्रीय व निरंकुशात्मक दोनो ही प्रकार के देशो

में, उन के काम - काज़ में दखल रखता है। रोमन गिरजा सभी देशो में है और वह सभी कुछ में मिला जुला सा है।

इस लोहे व मिट्टी के मिश्रण के बार में आप को मैं कुछ और बातताहूँ याद कीजिये कि जब ख्रुश्चेव ने संयुक्त राज्य संघ की मेज पर अपना जूता पटक कर झाड़ा था। उस समय वहाँ पर पाँच पूर्वी व पाँच पश्चिमी राष्ट्र उपस्थित थे पूर्वी देशों की ओर से बोला था और राष्ट्रपति आईजन हॅवर पश्चिमी देशों की ओर से बोले थे। रुसी भाषा में ख्रुश्चेव का अर्थ - 'मिट्टी' है और आईजनहॉवर का अर्थ 'लोहा' है। दुनियां के दो विशेष प्रमुख नेता साथ साथ वहां बैठे थे - उस लोहे व मिट्टी से बने पांवों के दो बड़े अंगूठे वहाँ बैठे थे। हम अब उस मूर्ति के एकदम अंतिम चरण में आ पहुँचे है।

पद ४ में वह पूछता है कि 'कौन उस पशु से लड़ सकता है?' अब, इस समय दुनिया में अनेक बड़े शक्तिशाली राष्ट्र है - बड़े नाभी देश है। किन्तु ठीक इस समय 'रोम' ही सब से ऊपर है और पोप ही चालक की कुर्सी पर आसीन है। उस की शक्ति बढ़ती ही जा रही है कौन उस के विरुद्ध लड़ सकता है?

पद ६ कहता है कि उसने निन्दा के लिये अपना मुंह खोला। (वे मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश बना कर सिखलाते है - अपस्वार्थी, डींगमार, विलास सुख के चाहने वाले, भक्ति का वेश भरने वाले पर परमेश्वर की सामर्थ को अस्वीकार करेन वाले)उसने परमेश्वर के नाम की निन्दा करी और उस नाम को उपाधियों में बदल डाला और असली नाम को लेने से इंकार किया है।

पद ७ 'और उसे यह अधिकार दिया गया कि वह पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाये।' संत लोगों का सताया जाना सच्चे विश्वासियों के लिये मृत्यु और यह सब प्रभु के नाम से करना ताकि उस के नाम की निन्दा हो। जैसा कि रुस में हो रहा है। यह इसलिये है क्योंकि रोमन कैथोलिक गिरजे (धर्म) ने उन के साथ यही किया था।

पद ८ कहता है कि, 'और पृथ्वी के सब रहने वाले, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गये, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।'

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि भेड़ें उसकी पूजा नहीं करेंगी। केवल चुने हुओं को छोड़ कर बाकी सभी, धोका खा जायेंगे। चुने हुए लोग मगर धोखा नहीं खायेंगे। क्योंकि वे अपने चरवाहे का शब्द सुनती और उसके पीछे चलती हैं।

तब, अब यह देखिये, जो हम आपको दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। मृत्यु का यह बीज, संस्थागत बनने का यह बीज, जिस की बुनियाद प्रथम कलीसियायी काल में पड़ी थी, अब अन्त में बढते-बढते एक वृक्ष बन चुका है जिसके साये में प्रत्येक दुष्ट व गलत चिड़ियाएँ बसेरा किये हैं। उस के इस दावे के बावजूद कि वह जीवन-दायी है, वास्तव में वह मृत्यु देने वाली है। उस का फल 'मौत' है। जो उसके साथ भागेदारी रखते हैं वे मर चुके हैं। दुनिया का यह बड़ा शक्तिशाली गिरजा और इसका तंत्र, जो लोगों को मूर्ख बना कर कहता है कि उसमें भौतिक व आत्मिक उद्धार है, वह हजारो-लाखों लोगों को धोखा देकर उन्हें नाश कर रहा है। किन्तु न केवल वह निर्जीव को मूर्त रूप देने वाली है, वरन यह मृत सड़े मांस वाला प्राणी स्वयं भी मौत से मारा जायेगा और इस प्रकार आग की झील में जल कर मरेगा ओह! वे मनुष्य तब सोचेंगे कि उस के संग रहने से उन का कैसा अन्त हुआ है। 'लोगों उसमें से बाहर आओ तुम क्यों मर रहे हो?

अंतिम चेतावनी

प्रकाशित वाक्य २:२३ ''और मैं उस के बच्चों को मौत से मारूँगा और तब सब कलीसियाये जान लेंगी कि हृदय और मन का परखने वाला मैं ही हूँ: और मैं तुम में से हर एक को उस के कामो के अनुसार बदला दूँगा। परमेश्वर हृदयों को देखता है। यह तरीका वह कभी बदलता नहीं

है और न ही कभी बढ़लेगा। जैसा कि प्रत्येक काल मेंरहाहै यहाँ भी दो तरह के समूह हैं और दोनों ही यह दावा कर रहें हैं कि वे परमेश्वर से प्रकाशन पाते हैं तथा यह कि दोनों के सम्बन्ध परमेश्वर से बने हुए हैं। तो भी परमेश्वर की पक्की नेव बनी रहती हैं और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहचानता है: और जो कोई प्रभु का नाम लेता है वह अधर्म से बचा रहे। (२ तिमुथियुस २:११) 'प्रभु मन को परखता है।' अंग्रेजी भाषा के इस शब्द 'सर्च' (Search) 'परखने' का अर्थ है (To Track या to Follow up) पीछा करना या पीछे-पीछे जाकर पकड़ना। परमेश्वर हमारे विचारों को परखता है उन कीजांच करता है। वह जानता है कि हमारे मनों में क्या है। वह हमारे कामो को देखता है जो कि निश्चित तौर पर उसको प्रकट करेत हैं जो हमारे भीतर भरा होता है। हमारे हृदय ही में से या तो धार्मिकता प्रकट होती है या दुष्टता। हमारे इरादे, हमारे उद्देश्य सभी उसे पता है क्योंकि वह हमारी प्रत्येक हरकत पर नजर रखता है और जब हमारे जीवन का लेखा जोखा लिया जायेगा तब प्रत्येक हरकत हमारी सारी बातों को न्याय के सामने आना होगा। झूंठी दाखलता के सामने तो परमेश्वर से भयभीत होने की बात ही नहीं थी और उसका मूल्य उन्हें बहुत महगा चुकाना पडेगा। काश वे सब जो उसके नाम को अपनाते हैं ऐसा जीवन जी सकें कि वे संत कहला सकें। हम लोगों को तो मूर्ख बना सकते हैं मगर प्रभु को नहीं।

TRACK - 6

एस. डेनियल सम्पत कुमार

डू। नंबर: 147, थिरुनीलाई कॉलोनी, विचूर (पोस्ट),

चेन्नई -600103

S.DANIEL SAMPATH KUMAR

No. 147, Thirunilai colony ,

vichoor post , chennai - 600 103

E-Mail : sdanielsampathkumar@gmail.com

Website : danielendtimebooksministry.org

Phone No : 99419 74213 , 96001 71260